International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 06-07-2022; Accepted: 22-07-2022; Published: 07-08-2022
Volume 8, Issue 4, 2022, Page No. 100-102

आदर्शवादी परम्पराः इमैनुएल कांट

Nisha Kanwar
Department of Political Science, Rajasthan University, Jaipur, Rajasthan, India

सारांश
जर्मन आदर्शवादी दर्शन के पिता इमैनुअल कांट का जन्म 1724 ईस्वी में जर्मनी के कोनिग्सबर्ग प्रदेश में हुआ। कांट 18 वीं व 19 वीं शताब्दी के एक अत्यंत ही प्रमुख दार्शनिक स्वीकारे जाते हैंए जिनकी कृतियों में हम जहाँ एक ओर ज्ञानमीमांसा के क्षेत्र में इंद्रियानुभववाद तथा बुद्धिवाद के एकांकीपन को समाप्त समीक्षा बाद नामक सिद्धांत की स्थापना की चेष्टा देखते हैं। तो वहीं दूसरी ओर भी नैतिकता के क्षेत्र में कठोरता बाद या बुद्धिवाद ये नैतिक शुद्धतावाद के रूप में एक महत्वपूर्ण नैतिक दार्शनिक रह चूके हैं। इन के सिद्धांत में हम मानव व्यक्तित्व के उस अंश को अति निम्न स्थान पाते हैं जिसे हम भावना कहते हैं। मनुष्य विवेकशील प्राणी होने के नाते श्रेष्ठतम जीव माना जाता है।तथा उसके नैतिकता के लिए बौद्धिकता हीसर्वोपरि है। संभव है। इसी कारण से उनके सिद्धांत को बुद्धिवाद कहा जाता है। वे नैतिकता के लिए नैतिक नियमों को कठोरता से पालन की बात करते हैं। इसके लिए कोई अपवाद नहीं स्वीकार आ जाता है। आता है। इसे कठोरता वाद कहा जाता है। इसे कुछ समीक्षक नैतिक शुद्धतावाद भी कहते हैं क्योंकि इसमें फल या परिणाम के लिए कोई विशेष स्थान नहीं है।कांट अपने नैतिक दर्शन का प्रारंभ अत्यंत ही नाटकीय ढंग से इस घोषणा के साथ करते हैं कि श्इस संसार या संसार से परे हम किसी भी चीज की कल्पना नहीं कर सकते हैंए जिसे हम निरूपाधिक शुभ कह सकते हैए इसका मात्र एक अपवाद शुभ संकल्पना माना जाता हैश। कांट के इस कथन का यह अर्थ लगाया जाता है कि शुभ संकल्प भी एकमात्र वैसा संकल्प है जो हर परिस्थिति में सत्य रूप में शुभ है। यह किसी भी परिप्रेक्ष्य के द्वारा प्रभावित नहीं होता है। यह निरपेक्ष है। इसमें सापेक्षता के लिए कोई स्थान नहीं है।इनके अनुसार नैतिकता एक आंतरिक वस्तु है जिसे राज्य न लागू करता है और न कभी लागू की जानी चाहिए।उनका यह मानना हैएराज्य का सच्चा कर्तव्य नागरिक के जीवन को विकसित कर उसे परिपूर्ण बनाना है।

मूल शब्दः ज्ञानमीमांसा, बुद्धिवाद, इंद्रियानुभववाद, कठोरता वाद, समीक्षा वाद, नैतिक शुद्धतावाद।

प्रस्तावना
कांट जर्मन आदर्शवादी दर्शन के पिता कहलाते हैं। कांट के अनुसार शुद्ध बुद्धि का परिचय उस ज्ञान से है जो मन की स्वाभाविक प्रकृति के कारण प्राप्त होता है इंद्रियों द्वारा प्राप्त होने वाले अनुभवों से नहीं। अनुभव से दूषित न होने के कारण ही इसे शुद्ध बुद्धि कहा जाता है। अपने ग्रंथ में कांट ने ज्ञान प्राप्ति के दो साधनों का उल्लेख किया हैः इन्द्रियां एवं मन या बुद्धि। कांट के अनुसार इंद्रियों का कार्य है, विभिन्न प्रकार के संवेदन प्रस्तुत करना। मन का कार्य है इन संवेदन में संबंध स्थापित करना और उन्हें व्यवस्थित करना। कांड की मान्यता है कि मानव बुद्धि की कुछ मर्यादाएं हैं, उस पर देश, काल तथा कारण कार्य संबंध का प्रभाव पड़ता है। ये तत्व हमारे लिए नित्य सकते हैं। इंद्रियजन्य ज्ञान से इसकी पुष्टि होना आवश्यक नहीं है। इन तत्वों के आधार पर हमारा ज्ञान हर प्रकार के संदेह और अस्थिरता से मुक्त होता है। वह सत्य और नित्य बन जाता है। इंद्रियजन्य अनुभवों के आधार पर वस्तु सत्ता का जो ज्ञान हमें प्राप्त होता है वह अनुभव निरपेक्ष कहलाता है, पर दूसरे प्रकार का ज्ञान अनुभव सापेक्ष होता है। जिसमें किसी प्रकार के अनुभव की आवश्यकता नहीं होती। कांट के अनुसार बुद्धि में इतनी सामर्थ्य नहीं है कि वह इस बाहरी जगत के मूल तत्व को प्रकट कर सके। बुद्धि तो केवल उसी बात को प्रकट करती है जिसका उसे अनुभव होता है। लेकिन ईश्वर, आत्मा, भावी जीवन आदि कुछ बातें ऐसी भी हैं जो अनुभवातीत है।
कांट के नीतिशास्त्रीय सिद्धान्त को कर्तव्य दृकर्तव्य का सिद्धान्त भी कहते हैं। इस सिद्धान्त का केन्द्र बिन्दु अनुभव, भावना या फिर कर्म का लक्ष्य नहीं बल्कि विशुद्ध कर्तव्य अर्थात् 'कर्तव्य के लिए कर्तव्य ' है। कांट 'कर्तव्य दृकर्तव्य के लिए' का उपदेश देते हैं। हमें कोई कर्म इसलिए नहीं करना चाहिए कि उससे हमें सुख मिलता है बल्कि कर्म को कर्तव्य समझकर करना चाहिए। कांट के अनुसार, नैतिक नियम 'निरपेक्ष आदेश' है। इन नियमों का पालन बिना किसी शर्त के होना चाहिए। कांट का मत है कि व्यावहारिक बुद्धि अथवा अंतःकरण पर अपने–आप लागू किए जाने वाले नैतिक नियम ही 'निरपेक्ष आदेश' हैं। इन नियमों का पालन बिना किसी फल की आशा के करना चाहिए। ये नियम स्वयं साध्य हैं, न कि किसी अन्य लक्ष्य के साधन। कांट के अनुसार, हमें नैतिक भावनाओं पर कभी नैतिकता को आधृत नहीं करना चाहिए। ये भावनाएं हमारे कर्मों में दोष ला देती हैं। इसलिए हमें सदैव इन भावनाओं पर नियंत्रण रखते हुए केवल बुद्धि के आदेश के अनुसार ही कर्म करना चाहिए। कांट के निरपेक्ष आदेश में भावना, इच्छा, लिप्सा, आकांक्षा, वासना आदि का कोई महत्व नहीं है। कांट सदैव इनके दमन का आदेश देते हैं।" कर्तव्य, कर्तव्य के लिए' जो कांट की प्रिय उक्ति है, का यह अर्थ यह है कि हमें कर्म केवल कर्तव्य भावना से करना चाहिए। किसी फल की आशा रखकर किया गया कर्म नैतिक दृष्टिकोण से कभी नहीं माना जा सकता। कांट सुखवादियों के मत का घोर खंडन करते हैं कि सुख प्राप्ति और दुःख निवारण के लिए कर्म करना चाहिए। कांट के अनुसार कर्म करना हमारा धर्म है। निष्काम कर्म ही हमारा आदर्श है। कर्म को कर्तव्य के रूप

में ही करना चाहिए, इसके परिणाम पर विचार नहीं करना चाहिए। कांट ने तीन सूत्र दिए हैं। प्रथम, केवल उसी सिद्धांत के अनुसार काम करे, जिसकी इच्छा आप उसी समय सार्वभौम नियम बन जाने पर कर सकते हैं। द्वितीय, ऐसा कर्म करे कि मानवता चाहे आपके अंदर हो या दूसरे के अंदर, सदैव साध्य बनी रहे, साधन नहीं। तृतीय, प्रत्येक व्यक्ति एक साध्य है, किसी को भी साधन नहीं कहा जा सकता। विवेक सभी में समान रूप से निहित है. इसलिए सबका मूल्य बराबर है। इस साम्राज्य में न कोई राजा है न कोई प्रजा। अतः साध्यों के साम्राज्य के सदस्य के रूप में कार्य करें।

सद्गुण के नैतिक शास्त्रीय सिद्धान्त के आधार पर भ्रष्टाचार का अर्थ है नैतिकता के निरपेक्ष आदेश का उल्लंघन जिसमें दूसरों को चोट पहुंचाना तथा न्यायपूर्वक कार्य करने जैसे कर्तव्यों का भी उल्लंघन शामिल है। यह इस बात से भी स्पष्ट होता है क्योंकि भ्रष्टाचार का अर्थ ही है कुछ लोगों को अवैध तथा अनैतिक रूप से लाभ दिलाना। इसी तरह कांट के नैतिकता सिद्धान्त के अनुसार किसी व्यक्ति की इन सिद्धान्तों के प्रति प्रतिबद्धता देखी जाएगी न कि उस व्यक्ति के कार्यों का परिणाम। इस आधार पर भ्रष्टाचार का अर्थ है धोखा जिसमें किसी व्यक्ति की बौद्धिक तथा नैतिक क्षमता की अनदेखी की जाती है। इसी आधार पर भ्रष्टाचार को अनैतिक माना जाएगा। परन्तु प्रयोजनवादी अर्थात् उपयोगितावादी सिद्धान्त के अनुसार भ्रष्टाचार जैसे कृत्य को नैतिकता की कोटि में रखा जा सकता है। कुछ लोगों के अनुसार भ्रष्टाचार का अर्थ है कुछ ऐसा करना जिससे नौकरशाही या अपना काम करने के लिए बाध्य हो तथा उसकी क्षमता में भी वृद्धि हो जिससे ज्यादातर लोगों को लाभ मिलने की उम्मीद हो सकती है। हालांकि वर्तमान में इस तरह के तर्क दिए नहीं जाते क्योंकि थोड़े समय के लिए भले ही नौकरशाही या अपने सरकारी कर्मचारियों के कार्य में तेजी आ जाए परन्तु भ्रष्टाचार के कारण फैली ऐसी कार्य–संस्कृति का दूरगामी परिणाम बुरा होता है। परन्तु उपयोगितावाद के 'अधिकतम लोगों के अधिकतम सुख' के सिद्धान्त को अगर वृहद परिप्रेक्ष्य में लागू किया जाए तो फिर भ्रष्टाचार को भी नैतिक ठहराया जा सकता है।

नैतिकता को स्पष्ट समझने के लिए कांट का एक और सूत्र है दृ स्वयं साध्य का सूत्र दृ इस भांति आचरण करो, जिससे कि अपने तथा प्रत्येक अन्य व्यक्ति के व्यक्तित्व में निहित मानवता को सदा एक ही समय–साध्य के रुप में प्रयोग करो, मांग साधन के रुप में कदापि नहीं। इस सूत्र में कांट ने मानव की गरिमा तथा वस्तुओं की उपयोगिता में अन्तर किया है। किसी वस्तु का प्रयोग किसी अन्य प्रयोजन या साध्य के साधन के रुप में किया जा सकता है। वस्तुओं की यही उपयोगिता है कि मनुष्य के अभीप्सित साध्य की साधन होती है किन्तु इसके विपरीत, मनुष्य के व्यक्तित्व की गरिमा होती है। किसी भी व्यक्ति को अपने साध्य को साधन के रुप में प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। कांट की स्वतंत्रता, स्वर्ग तथा नरक के भय तथा प्रलोभन से दूर होने की स्थिति है, भय, प्रलोभन से होने वाली स्थिति को स्वतंत्रता या नैतिकता नहीं कहा जा सकता। भय, प्रलोभन से व्यक्ति कार्य तो कर सकता है लेकिन, किसी साधन को अपना साध्य नहीं कर सकता। कांट के मन में मानवता के प्रति असीम आदर है, वह शोषण मुक्त स्वराज की कल्पना करता है, जिसमें स्वशासन होगा जो व्यक्ति की वास्तविक स्वतंत्रता पर आधारित होगा कांट के नीतिशास्त्र का केन्द्रीय प्रश्न यही ही है कि क्या व्यक्तिगत नियम को सार्वभौम रूप प्रदान किया जा सकता है। यह निराधार तथा अप्रासंगिक है।

मनुष्य के अभिप्राय और नैतिक नियम यह दोनों बातें सर्वोच्च शुभ की प्राप्ति के लिए जरूरी है। पवित्र इच्छा की अवस्था एक जीवन (एक शरीर यात्रा) में प्राप्त करना संभव नहीं हैं, इसलिए सर्वोच्च शुभ अमरता की मांग करता है, सर्वोच्च शुभ का दुसरा पक्ष हमारी नैतिकता के अनुसार हमें सुख प्राप्त हो अर्थात हम सुख के अधिकारी हों, मनुष्य की निष्पक्ष बुद्धि इस प्रकार की मांग करती है। ऐसी व्यवस्था एक सक्षम सत्ता ही कर सकती है, यह सत्ता ईश्वर है। सुख मानवीय जीवन की अवस्था है। मनुष्य इच्छाओं तथा कामनाओं के साथ प्राकृतिक जगत का एक प्राणी है, वह स्वयं उस जगत की उत्पत्ति का कारण नहीं है अतः मनुष्य के लिए यह संभव नहीं है कि वह अपने बल पर सुख उत्पन्न करने वाली प्रकृति को नैतिकता के अनुरूप बना सके। यदि सम्पूर्ण शुभ या सर्वोच्च शुभ संभव है तो सुख तथा नैतिकता का सामंजस्य होना ही चाहिए। इसलिए ईश्वर की सत्ता को स्वीकारना आवश्यक है जो कि प्रकृति जगत का अंग नहीं अपितु उसका कारण है सुख तथा नैतिकता के सामंजस्य का आधार है।

निष्कर्ष

शोपेन हावर 1788 दृ 1860 के अनुसार ईश्वर आधारित नीतिशास्त्र का एक बार खण्डन करके कांट पुनः उसी की और वापस लौट आता है। यह सच है कि कांट के अनुसार नैतिकता का स्रोत स्वतंत्र व्यक्ति है। ईश्वर की आज्ञा के अनुपालन से उत्पन्न नैतिकता सही अर्थों में नैतिकता नहीं है। लेकिन यह उसका विश्वास था कि नैतिक जीवन को प्रोत्साहित करने के लिए ईश्वर की सत्ता को प्रतिपादित करना आवश्यक है। ... नैतिक व्यक्ति यह जानता है कि अमरता तथा ईश्वर का विश्वास 'निष्पक्ष बुद्धि' से उत्पन्न होता है, किसी भय अथवा प्रलोभन से नहीं।

फैहिगर नैतिकता की पूर्वमान्यताओं पर प्रतिक्रिया करते हुये कहते हैं कि नैतिकता की मांग केवल यह है कि मानो हम स्वतंत्र तथा अमर है तथा मानो ईश्वर का अस्तित्व है। ... अमरता तथा ईश्वर जैसे प्रत्ययों की संवादी वास्तविकताएँ हों। लेकिन ईश्वर तथा अमरता के प्रति कांट का दृष्टिकोण किसी भी अवस्था में हठवादी नहीं हुआ। वह बार–बार इस बात की चेतावनी देता रहता है कि हमें इसका ज्ञान नहीं हो सकता।

कांट की नैतिकता का सिद्धांत इसलिए भी प्रभावी है क्योंकि कांट का मानना है कि ग्रीक नीतिशास्त्र सर्वोच्च शुभ की व्यावहारिक संभावना की समस्या का समाधान न कर सका। इपीक्यूरसवादियों ने सुख के सिद्धांत को ही नैतिकता के सर्वोच्च सिद्धांत के रूप में प्रतिष्ठित करके उसको अत्यंत संकीर्ण निम्न रूप प्रदान कर दिया। अपने व्यक्तिगत सुख के लिये मनमाने चुनाव को ही उन्होंने नैतिकता का जामा पहना दिया। इसके ठीक विपरीत स्टोइकवादियों ने सद्गुण को सर्वोच्च शुभ के रूप में प्रस्तुत किया। लेकिन उन्होंने एक ओर तो मनुष्य की नैतिक क्षमता को बहुत अतिरंजित रूप में प्रस्तुत किया जो कि सामान्य अनुभव में पुष्ट नहीं होती और दूसरे उन्होंने सर्वोच्च शुभ के दूसरे महत्वपूर्ण तत्व सुख की अवहेलना की। कांट के अनुसार ईसाई धर्म सर्वोच्च शुभ की जो परिकल्पना प्रस्तुत करता है, उसमें व्यावहारिक बुद्धि की सारी मांगे पूरी हो जाती है। क्योंकि यह मानता है कि नैतिक आदेश पवित्रता की अवस्था प्राप्त करना चाहता है और यह तभी संभव है यदि मनुष्य अमर हो और मनुष्य सद्गुण तथा सुख से संयुक्त सर्वोच्च शुभ का अनुसरण तभी कर सकता है यदि ईश्वर का अस्तित्व हो यही स्मरणीय है कि कांट ईसाई नीतिशास्त्र को ईश्वर आधारित नहीं मानता। कांट का यह दृ

ढ़ मत है कि नैतिक आदेश के पालन करने की प्रेरणा ईश्वर की आज्ञा से उत्पन्न परिणामों से नहीं मिलती अपितु मात्र कर्तव्य की भावना से मिलती है और उसी के समुचित पावन से ईश्वर को प्राप्त करने की समुचित योग्यता प्राप्त की जा सकती है। इस प्रकार कांट के अनुसार, नैतिक आदेश हमें धर्म की और ले जाता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. मिश्र, सभाजित, कांट का दर्शन, प्रकाशक उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 1988
2. नागराज, ए., मानव व्यवहार दर्शनः प्रकाशक दिव्यपथ संस्थान, अमरकंटक, 2008
3. प्रसाद, शंकरीः यूरोप में दर्शनशास्त्रः अनुवादक डोभाल, सुशीलाः राजकमल प्रकाशन, 1992
4. एलिसन, हेनती ई., कांट थ्योरी ऑफ फ्रीडम, कैंम्ब्रिज, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1991
5. बैंक, लैविस व्हाइट, कॉमेंटरी ऑन कांट्स क्रिटिक ऑफ प्रैक्टिकल रीजन, शिकागो, द यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, 1990
6. गुन्थेर, पाल, एडी., कांट एंड मॉडर्न फिलॉसफी, कैंम्ब्रिज, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी, प्रेस 2006
7. कांट, इम्मानुअल, क्रिटिक ऑफ प्रैक्टिकल रीजन, ट्रा. , प्लूहार वार्नर एस., इंडियन पोलिस, हेकेट पब्लिसिंग कंपनी, 2000।
8. सुलिवन, रोडार ने., इमैनुअल कांटस मॉरल थ्योरी, कैंम्ब्रिज, कैंम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2002
9. कांट, इमैनुअल, द मैटाफिजिक्स ऑफ मॉरलस, ट्र., ग्रिगर मैरी, कैंम्ब्रिज, केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2002